eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

छायावादी कविता में पर्यावरणीय चेतना

मोहम्मद मसरूफ रजा[1], डॉ अरुण कुमार[2]
[1]शोधार्थी, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (उ.प्र.)
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय रामपुर (उ.प्र.)

Received: 24 Oct 2024 Accepted & Reviewed: 25 Oct 2024, Published : 31 Dec 2024

Abstract

वर्तमान युग पर्यावरणीय चेतना का युग है। प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण के प्रति चिंतित है। ज्ञान और विज्ञान की हर शाखा के विद्वान पर्यावरण की सुरक्षा और उसके संचालन के प्रति जागरूक हैं। वर्तमान समय में देश– विदेश का प्रत्येक नागरिक स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण में रहने के अपने अधिकारों के प्रति सजग होने लगा है और अपने दायित्व को भली भाँति समझने लगा है। पर्यावरण का अर्थ है– परि+आवरण, परि अर्थात चारों ओर का आवरण अर्थात ढका हुआ। वे सारी परिस्थितियाँ जो किसी भी प्राणी या प्राणियों के विकास पर चारों ओर से प्रभाव डालती है, वह उसका पर्यावरण कहलाती हैं।

पर्यावरणीय चेतना, मनोवैज्ञानिक कारकों से सामान्यतः जुड़ी होती हैं। ये कारक मनुष्य की पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार करने की प्रवृत्ति को निर्धारित करते हैं पर्यावरणीय चेतना के निर्धारण के लिए, पर्यावरणीय समस्याओं को निस्तारित करने के प्रयासों का समर्थन करना समाज हित में जरूरी है। पर्यावरणीय चेतना के निस्तारण के लिए, विकास और प्रकृति के बीच समन्वय स्थापित करना चाहिए। पर्यावरणीय चेतना के लिए जनसहभागिता को होना अति आवश्यक है। इसमें लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिये एक निश्चित अंतराल पर कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं तथा भारत सरकार पर्यावरण के प्रति समाज के अन्दर जागरूकता लाने के लिये प्राथमिकता के आधार पर कई कार्यक्रम तथा योजनायें चलायी जा रही हैं। इसके संरक्षण के लिये वृक्षारोपण करना, जैविक पदार्थो का इस्तेमाल करना फसल चक्र अपनाना, जल का संरक्षण करना और प्लास्टिक का कम से कम इस्तेमाल करना चाहिए।

शब्द संक्षेप– हिन्दी साहित्य, काव्य, छायावादी कविता, पर्यावरणीय चेतना

Introduction

मानव जीवन एवं पर्यावरण एक–दूसरे के पर्याय हैं। जहाँ मनुष्य का अस्तित्व पर्यावरण से है वहीं मानव द्वारा लगातार किये जा रहे पर्यावरण के विनाश से हमें अपने भविष्य की चिंता सताने लगी है। हमारे प्राचीन वेदों जैसे ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेत और अथर्ववेद में पर्यावरण के महत्व को बताया गया है। हिन्दी साहित्य में विशेष तौर पर छायावादी युग में प्रकृति को विशिष्ट स्थान दिया है। पर्यावरण चेतना की समृद्ध परम्परा हमारे साहित्य और समाज में रही है और वह वर्तमान समय में भी उतना ही प्रासंगिक है। आधुनिक समय में सम्पूर्ण संसार में फैले हुये प्रदूषण को कम करने हेतु हम समझ सकते है कि प्राचीन एवं आधुनिक वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों के समान ही हिन्दी साहित्य की परम्परा में लेखकों और कवियों ने पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए निरन्तर समाज को इस ज्वलंत समस्या के बारे में जागरूक करने का प्रयास किया है और यह प्रयास अनवरत जारी है। अतः पर्यावरण के प्रति प्रेम संरक्षण आत्मानुभूति तथा किसी को भी हानि नहीं पहुँचाने का भाव हिन्दी साहित्य में बहुतायत से पाया जाता है। हिन्दी साहित्य

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

में आदिकाल से ही प्रकृति के अनावश्यक दोहन शोषण का विरोध किया गया है। हिन्दी के सभी लेखकों, कवियों और उपन्यासकारों ने पर्यावरण के अनावश्यक शोषण के विरूद्ध आपत्ति जताकर मनुष्य को आत्मानुभूति की ओर प्रेषित किया है।

छायावादी काव्य सौन्दर्यवादी रहा है उसने मानव में ही नहीं, प्रकृति में भी अनेक प्रकार के सौन्दर्य के दर्शन किये हैं। सामान्यतः ये कवि सूक्ष्म और अतीन्द्रिय रूप के चितेरे रहे हैं। इन्होंने अपने काव्य के द्वारा हर उस विषय को उकेरा है जहाँ तक इनकी दृष्टि पहुँच सकी है। पर्यावरणीय चेतना को अति सजगता के साथ काव्य की मालाओं में गूंथा है। छायावादी कविता में पर्यावरण को सजीव रखने की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। कवियों के अन्तर्मन में प्रकृति प्रेम की अमिट छाप उनके हृदय तक गम्भीरता से प्रतिबिम्बित दिखाई देती है। जो पर्यावरणीय चेतना का प्रमुख उदाहरण है। छायावादी युगीन कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति को अपने कोमल और कठोर दोनों रूपों में अंकित किया है। मानवीकरण के चित्र सुमित्रानन्दन पंत के काव्य में अधिक प्रभावकारी रहे हैं–

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
वह संध्या सुन्दरी परी –सी
धीरे– धीरे – धीरे।

छायावादी कवियों ने अपनी कविताओं में प्रकृति को सूक्ष्म और उत्कृष्ट रूप मे उभारा है। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत,सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा के काव्य में पर्यावरण चेतना कूट–कूट कर समाहित है सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। पंत ने निम्न पक्तियों द्वारा प्रकृति का मनोविश्लेषण किया है–

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले ! तेरे बाल – जाल में
कैसे उलझा दू लोचन
भूल अभी से इस जग को।

जयशंकर प्रसाद की कामायनी का पहला पद ही पर्यावरण का उत्कृष्ट उदाहरण है–

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
एक बैठ शिला की शीतल छाह
एक पुरुष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह

जयशंकर प्रसाद जी ने अपनी कालजयी कृति 'कामायनी' में प्राकृतिक उपादानों को पर्यावरण संरक्षण का हेतु मानते हैं। प्रसाद जी की दृष्टि में वन, पर्वत, नदी, निर्झर आदि के रूप में पर्यावरणीय संरक्षणात्मक विराट चेतना विद्यमान है। छायावादी कवियों मे महादेवी वर्मा ने प्रकृति के प्रति सहानुभूति परक दृष्टि अपनाई है व्यक्तिगत रूप से उनका व्यक्तित्व करुणा, ममता, विरह वेदना, सहानुभूति आदि भावों से परिपूर्ण

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

होकर उनके प्रकृति वर्णन में परिलक्षित होता है। महादेवी वर्मा छायावाद का मूल दर्शन सर्वात्मवाद को मानती हैं और प्रकृति को उसका साधन। इनकी रचनाओं में प्रकृति प्रतीकात्मक रूप में दिखाई देती है। प्रकृति रहस्यवाद की अनुपम चादर ओढ़े हुए है। इन्होंने प्रकृति पर नारी रूप का आरोपण कर अपने काव्य को एक नई दिशा प्रदान की है। पन्त जी ने प्रकृति के भीषण और कठोर रूप की गहरी व्यंजना की है। कवि प्रकृति के पर्यावरणीय उद्‌भव की श्रेष्ठता को धरती से लेकर आकाश तक परिलक्षित करना चाहता है। वह उस समय भी जब नीरव संसार के ऊपर सफेद रजत चन्द्रिका छिटकी रहती है और सम्पूर्ण विश्व के प्राणी एक नादान बालक के समान उसे देखकर आश्चर्य चकित हो जाते हैं। संसार के सभी पलकों पर अपरिचित दिव्य–लोक के स्वप्न विचरते रहते हैं। उस समय–

न जाने नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन ।

कवि को इसका निमंत्रण आकाशीय बिजली से प्राप्त होता है–

सघन मेघों का भीमाकाश
गरजता है जब तमसाकार.
दीर्घ भरता समीर निःश्वास
प्रखर झरती जब पावस धार
न जाने तपक तड़ित में कौन
मुझे इंगित करता तब मौन

वही रामेश्वर शुक्ल अंचल ने अपनी कविता ओ नभ में मंडराते बादल में प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को इंगित किया है। उन्होंने प्रकृति के पर्यावरणीय स्वरूप को एक नई लालसा के साथ प्रस्तुत किया है। एक ओर प्रकृति के कोप के कारण व्याप्त धरती पर जल की कमी वहीं दूसरी ओर नभ में काले–काले घटायमान बादल एक लालसा का प्रतिबिम्ब इंगित करते है –

ओ नभ में मँडराते बादल
ओ नभ में मँडराते बादल बे बरसे मत जा।
मन के होठों पर रस की बिसरी पहचान जगा।
पुरवा की लहरों में सुख की आतुरता उमगा ।

रामेश्वर शुक्ल जी ने अपनी रचनाओं में पर्यावरणीय चेतना का उद्‌गार एक प्रकृति की अनुपम छटा के रूप में किया है। कवि प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण करके, जब आत्मविभोर होकर तल्लीनता में हृदय की मुक्तावस्था को प्राप्त होकर कल्पना द्वारा उस सौन्दर्य की अभिव्यक्ति नाना रूपों में इस प्रकार करता है कि पाठक को प्रत्यक्ष दर्शन का सा आनन्द मिलता है, तब वहाँ यही सौन्दर्यनुभूति सौन्दर्य चेतना सक्रिय रूप से दिखाई देती है। महादेवी वर्मा का प्रकृति के प्रति भी अमिट अनुराग रहा है। प्रकृति उनको इसलिए भव्य तथा मोहक प्रतीत होती है क्योंकि उसी के माध्यम से उन्हें प्रिय की बाकी झाँकी मिल जाती है उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रकृति के तारों की मोती के समान, ओस की बूंदों को मोती के सदृश जुगनूओ को इन्दुमणि के

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

समान तथा दिन को सोने की उपमा दी है। काले बादलों में उन्हें बिजली की छटा इस प्रकार दृष्टिगोचर होती है जिस प्रकार नीलम के मन्दिर में हीरक प्रतिमा अपना सौन्दर्य विखेर रही हो।

छायावादी कवियों ने नवचेतना का प्रसार करते हुए सामान्य जनों में पर्यावरण के प्रति अपनी उदारता, कर्मठता, सहजता व सरलता के भाव से प्रकृति प्रेम का भाव उत्पन्न किया। छायावाद के पूर्व का प्रेम वासना प्रधान था। फिर छायावादी कवियों ने अपनी लेखनी अन्य भौतिक विषयों को छोड़कर प्रकृति के बीच बसे अद्भुत प्रेम की ओर चलाई। इस काल के कवियों की रचनाएँ देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें प्रकृति ने ही अँगुली पकड़कर चलना सिखाया है। वे प्रकृति के मध्य इतने विमुग्ध रहे कि उनकी प्रेम कल्पना का श्रृंगार प्रकृति ने ही किया है उनके काव्य उपकरणों को प्रकृति ने ही सजाया है उनकी मनोरम भावभूमियों के लिये सौन्दर्य सामग्री का संकलन प्रकृति ने किया और उनके चंचल भावुक मन विहंग को काव्य के सतरंगी नभ में विचरण करने की प्रेरणा प्रकृति ने प्रदान की है। प्रकृति उनकी संरक्षण केन्द्र बन गई है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन कवियों की मुखर लेखनी ने लोगो में पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्यों को समझना सिखाया। इन कवियों की रचना का आधार पर्यावरण के प्रति नवचेतना का आधार बन गया। छायावादी काव्य प्रकृति के नाम, रूपों के चित्रण के लिये भी विख्यात है। इन कवियों को प्रकृति सचेतन रूप मे दिखी है। निराला ने भी प्रकृति के नाना सौन्दर्य चित्र उतारे हैं। इनके प्रकृति चित्रण की प्रभावोत्पादकता के तीन प्रमुख आधार है – सूक्ष्म निरीक्षण, दृश्यों की सांमूलिष्ट योजना और मानवीकरण। सभी छायावादी कवियों ने प्रकृति पर मानवीय भावों, व्यापारों एवं चेष्टाओं का आरोप करके उसका सचेतन रूप चित्रित किया है। इस दृष्टि से छाया, बादल, मधुकरी, निर्झरी, संध्या, नौका–विहार, चाँदनी, जुगनू आदि कविताएँ ली जा सकती है। कवियों ने मानवीय भावों, भावनाओं, चेष्टाओं आदि से ओत–प्रोत करके पूर्णतया सचेतन प्राणी के रूप में प्रकृति का अंकन किया है। प्रकृति के विभिन्न परिवर्तनों एवं प्रकृति की गतिविधियों के द्वारा पर्यावरणीय चेतना समग्रता की शिक्षा दी जाती रही है।

निष्कर्ष– वस्तुतः छायावादी युगीन कवियों ने प्रकृति को 'सर्व सुंदरी' कहा है और प्रकृति से प्रेरणा लेकर कविताएँ लिखीं हैं। सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के सुकुमार कवि जिन्होंने अपने काव्य में प्रकृति चित्रण लोक शिक्षा की भांति प्रस्तुत किया। जयशंकर प्रसाद सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और पण्डित माखन लाल चतुर्वेदी ने पर्यावरण चेतना को नई दिशा प्रदान की। इन कविताओं में नैराश्य और विरह वेदना की अभिव्यक्ति मुखरित दिखायी दी। प्राकृतिक उपादानों को एक आयाम बनाकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। लोक हित में पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी काव्य का सृजन उन्नायकों के रूप में किया। महादेवी वर्मा की विरह से परिपूर्ण रचनाओं में प्रकृति के संरक्षण की एक अलग अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक नई दिशा का उदय हुआ। कल्पनावाद से परे होकर सृजन कार्य में एक नवीन शब्दाहुति दी गयी। लोक कल्याण के लिये छायावादी युगीन कवियों ने एक सजग उन्नायक की भूमिका का निर्वाह किया। जिसमें सदैव एक मुखरित चेतना के स्वर गुंजायमान होते रहते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. पर्यावरण अध्ययन, दयाशंकर त्रिपाठी, मोतीलाल बनारसीयस पब्लिशर्स वाराणसी, नवीन संस्करण – 2005
2. हमारा पर्यावरण, लईक फतेह अली, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नवीन संस्करण – 2007
3. कामायनी, जयशंकर प्रसाद, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण –1994

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 12, December 2024

4. पल्लव, सुमित्रानंदन पंत, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, नौवाँ संस्करण – 1993
5. परिमल, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण –1991
6. नीरजा, महादेवी वर्मा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम सजिल्द संस्करण – 2008